मैं मीरा भारती बनना चाहती हूँ।
जिला परिषद कार्यालय
BEHANBOX
chitrakoot collective

मैं ऊषा हूँ।

मैं चित्रकूट जिला परिषद
स्कूल में 12वीं की छात्रा हूँ।

अक्सर लोग मुझसे पूछते हैं,
"तुम्हारे क्या सपने हैं?
तुम क्या बनना चाहती हो?"
मैं कहती हूँ *"नेता"*।

आप सोचते होंगे कि यह कैसा सपना है?
मुझे सत्ता का लालच नहीं है। मैं सिस्टम
में बदलाव लाना चाहती हूँ।
गरीबों की मदद करना चाहती हूँ।

मेरी रोल मॉडल (प्रेरणा)
मीरा भारती हैं।
वो हमारे जिला परिषद की नयी
सदस्या हैं।

मैंने **उदया** के एक रिसर्च में पढ़ा था कि उत्तर प्रदेश में युवा, ख़ास करके लड़कियां राजनीति में बहुत कम शामिल होती हैं।

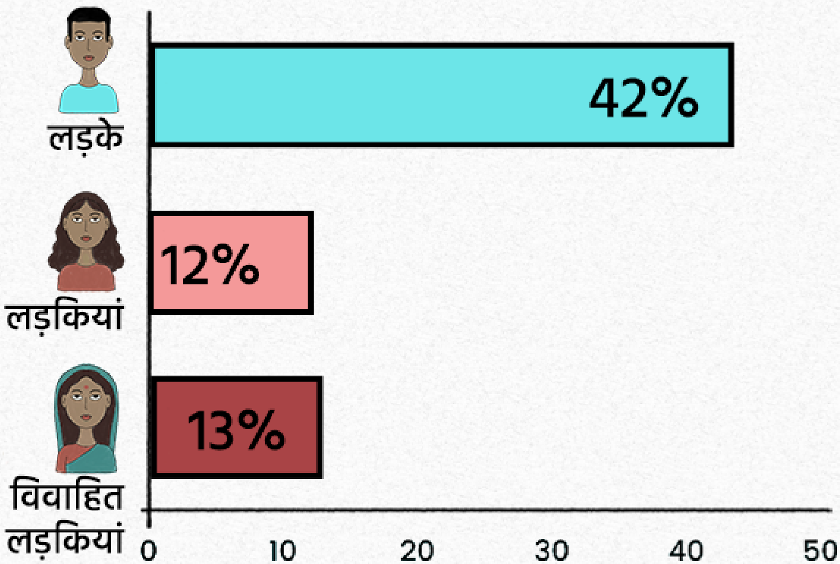

यू. पी. में (18-22) युवा जो राजनीतिक गतिविधियों में शामिल हुए

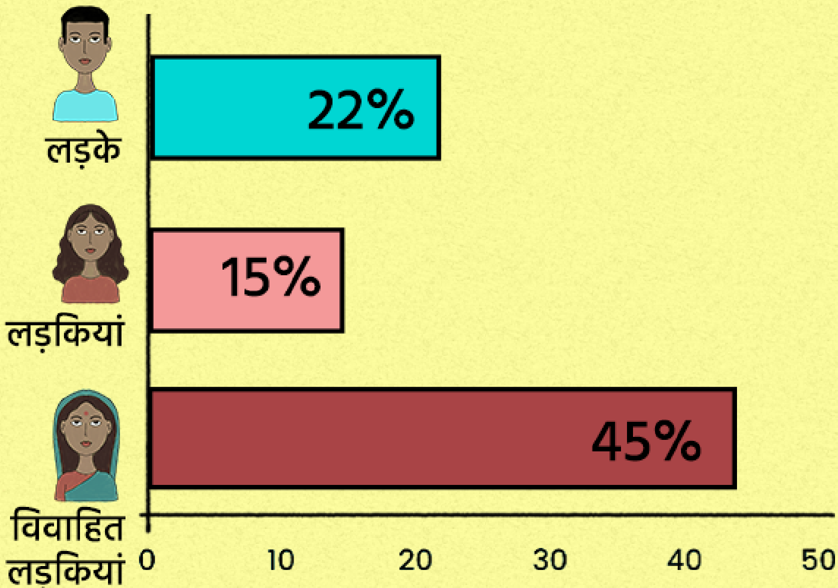

युवा जिन्होंने पिछले चुनाव में मतदान किया

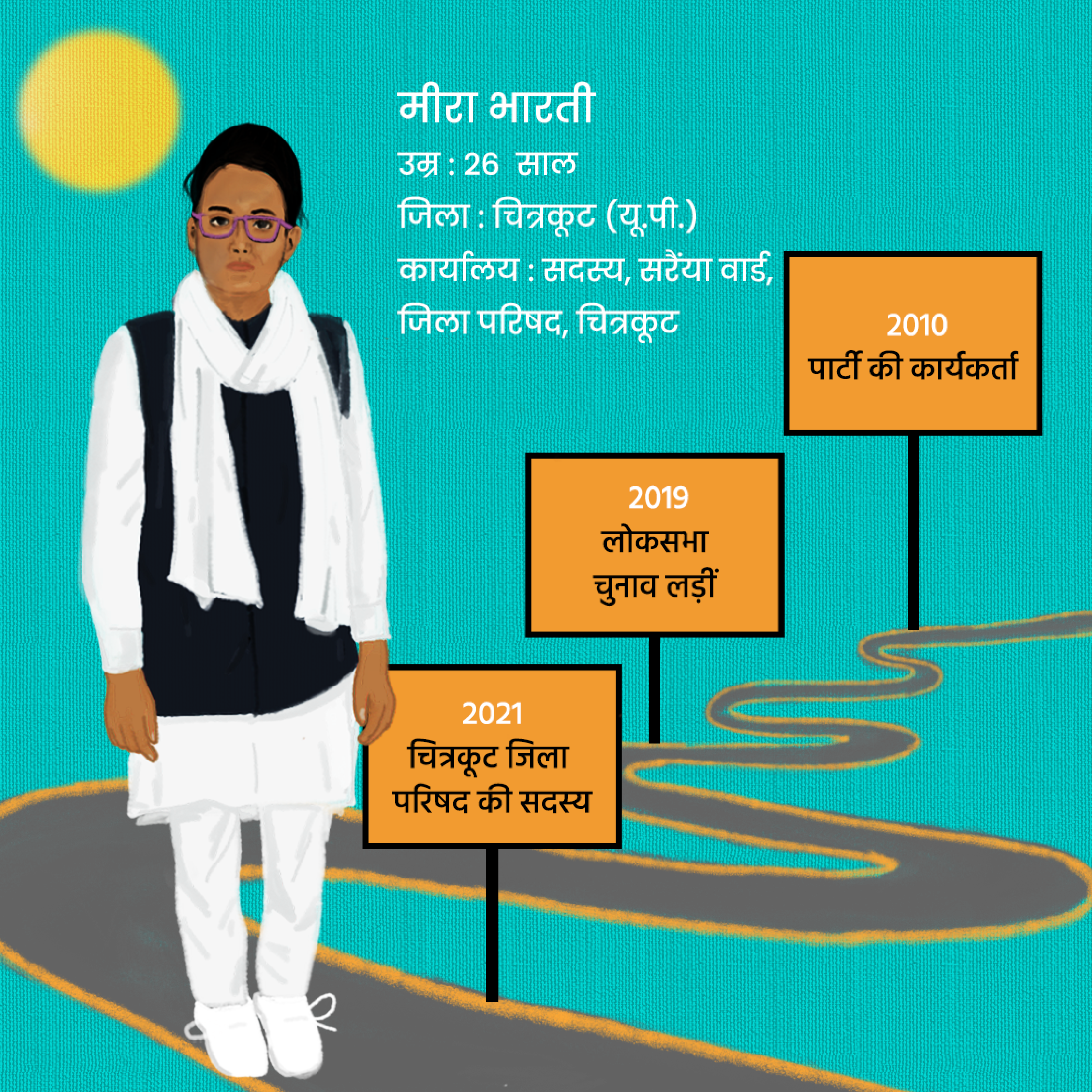
मीरा भारती
उम्र : 26 साल
जिला : चित्रकूट (यू.पी.)
कार्यलिय : सदस्य, सरैंया वार्ड,
जिला परिषद, चित्रकूट
2010
पार्टी की कार्यकर्ता
2019
लोकसभा
चुनाव लड़ीं
2021
चित्रकूट जिला
परिषद की सदस्य

मीरा एक गरीब दलित परिवार से हैं।
उनके माता-पिता मज़दूर हैं।

मीरा की शादी 14 साल में ही कर दी गयी।
बहुत चाहते हुए भी उन्हें आगे पढ़ाई करने
का मौका नहीं मिला।

ससुराल वालों ने भी उन्हें पढ़ने नहीं दिया।
एक साल तक घर के अंदर घुटन भरी जिंदगी
गुज़ार कर, वो थक गयी थीं। बहुत कहने के
बाद गांव वालों ने उनकी बात सुनी और
पंचायत बुला के उनका तलाक करवा दिया।

काफी मुश्किलों के बाद उन्होंने आगे की पढ़ाई पूरी की। पढ़ाई के लिए पैसे,
उन्होंने जंगलों से लकड़ी बेच कर, ट्यूशन पढ़ा कर और कई और काम कर
के इकट्ठा किये। पहले बी.ए., फिर एम. ए. और उसके बाद वकालत (एल.एल.बी.)
की पढ़ाई की।

मीरा भारती हमेशा से ही औरतों के हक़ के लिए काम करती आयी हैं। उनके जीवन का लक्ष्य महिला हिंसा के मुद्दों पर काम करना है।

अयोध्या

एक दलित लड़की के बलात्कार के केस पर रौशनी डाली । उनकी ही मुहीम के कारण, यु.पी. सरकार ने पीड़िता को 4 लाख 12 हज़ार रुपयों का मुआवज़ा दिया।

कैमहापुरवा

एक लड़की, अपने साथ हुए बलात्कार के सदमे को झेल नहीं पायी और आत्महत्या कर ली। मीरा ने उनके परिवार को न्याय दिलाने की मुहीम छेड़ी और सफल हुईं।

मीरा एक निडर और साहसी महिला हैं। इसी कारण से उन्हें बहुत धमकियाँ आती हैं। कभी डाकुओं से तो कभी समाज से। लेकिन वो कभी इन धमकियों से डर के पीछे नहीं हटी।

2020 में, मीरा भारती को जेल जाना पड़ा। जेल में भी उन्होंने महिला क़ैदियों की सुविधाओं के लिए आवाज़ उठाई। ख़ासकर गर्भवती महिलाओं के पौष्टिक खाने और टीकाकरण के लिए। उन्होंने सारी महिला कैदियों को अपने हक़ के लिए आवाज़ उठाने के लिए संगठित किया। मीरा कहती हैं कि, "मैं हमेशा शोषित लोगों के अधिकारों के लिए लड़ती रहूंगी "।

एक महिला का राजनीति में होना आसान नहीं हैं। उन्हें कई तरह के भेद-भाव झेलने पड़ते हैं। चाहे वो समाज से हों या पार्टी कार्यकर्ताओं से।

आज़ादी के 74 साल बाद भी, राजनीति में महिलाओं की भागीदारी काफ़ी कम है।

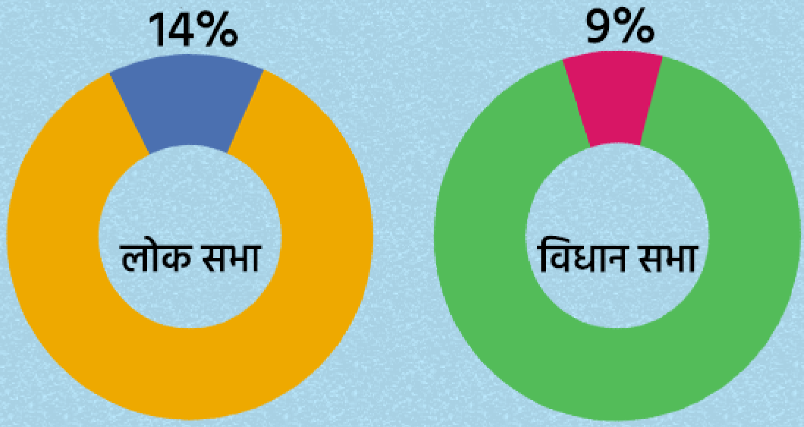

स्रोत: भारत निर्वाचन आयोग

ग्राम पंचायत, जिला परिषद और नगर निगम में 33% आरक्षण है, इसलिये यहाँ महिलाएं सत्ता में ज़्यादा हैं ।

मीरा दीदी! क्यों आज भी औरतें नेता नहीं बन पाती हैं?
क्योंकी पुरुष आज भी महिलाओं के साथ सत्ता बांटना नहीं चाहते। अब मेरी ही बात देख लो।
क्या हुआ, दीदी?
जब मैंने जिला परिषद के अध्यक्ष पद के लिए अपना नाम आगे किया, तो यहां के पुरुष सदस्यों को ये बात अच्छी नहीं लगी। मुझे हटना पड़ा।
मीरा दीदी! औरतों का राजनीति में शामिल होना ज़रूरी क्यों है?
सिस्टम में बदलाव लाने के लिए, सत्ता में आना ज़रूरी है। ख़ासकर हम जैसे पिछड़े वर्ग की औरतों के लिए।